

# SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME - B.Ed. 1st year

SESSION - 2021-2023

SUBJECT - Learning and Teaching

TOPIC NAME - स्किनर का सिद्धान्त

DATE - 11/01/2022

## \* B.F स्किनर ऑपरन्स फ़ैडरिक स्किनर \*

स्किनर का सक्रिय-अनुबंधन का सिद्धान्त  
या

क्रिया प्रसूत अनुबंधन का सिद्धान्त  
या

R-Type Theory या पुनर्वसन का सिद्धान्त

के नाम से जाना जाता है। स्किनर द्वारा प्रतिपादित सक्रिय अनुकूलित/अनुबंधन सिद्धान्त वर्तमानक व्यवहार पर आधारित है। स्किनर ने व्यापक मनीषित्व के क्षेत्र में विभिन्न महत्वपूर्ण प्रयोग किये। इस सिद्धान्त के माध्यम से स्किनर ने स्किन के लिए अनुकूलित परिस्थितियों के सृजन पर बल दिया।

## \* स्किनर का प्रयोग \*

(SKINNER'S EXPERIMENTS)

1. चूहे पर प्रयोग - सक्रिय अनुबंधन सिद्धान्त के प्रतिपादन हेतु स्किनर ने सफ़ेद चूहे पर प्रयोग किया। स्किनर ने एक लॉक्स में लीवर लगा कर उस लीवर का संबंध एक ल्याली से कर दिया। इस लीवर को खाने से खटू की हवाम के साथ ही ल्याली में भोजन पदार्थ का एक टुकड़ा आ गिरता था। लीवर के स्थान पर ही ल्याली में प्रवेश का मार्ग भी रखा गया था।

रिक्नर ने लिवर के पास ली-मार्ग से चूँह को उस लवसे में छोड़ दिया। प्रवेश करते समय चूँह का पैर स्वभाविक रूप से उस लिवर पर पड़ा तथा खट की ध्वनि हुई। इसके साथ ही चूँह लवसे में प्रवेश कर गया और वहीं सर्वे खाद्य पदार्थ को खा लिया। रिक्नर द्वारा इस प्रयोग की कई बार पुनरावृत्ति की गई तथा उन्होंने देखा कि भ्रूख लगने पर चूँह उस लिवर को बार-बार दबाना सीख गया।

## 2. कबूतर पर प्रयोग — कबूतर पर प्रयोग

करने के लिए रिक्नर ने एक पिप्पन पेटिका में एक दीवार पर कबूतर के सिर की ऊँचाई पर एक लटन लगा था। लटन पर चौंच मारने से थोड़े-से दाने नीचे रखी प्लेट में आ जाते लॉन्स में प्रकाश की ऐसी व्यवस्था की गई थी कि लाल रंग का प्रकाश जब लटन पर पड़ता था तो चौंच मारने पर भोजन मिलता था। नीले रंग का प्रकाश पड़ने पर भोजन नहीं मिलता था। रिक्नर ने एक भ्रूखे कबूतर को लॉन्स में डाल दिया। कबूतर इधर-उधर चौंच मारता रहा। लाल रोशनी पर जब उसने लटन पर चौंच मारी तो उसे भोजन मिला गया। कबूतर को दिशामित करने के लिए कभी नीली रोशनी तो कभी लाल रोशनी डाली जाती थी। कुछ अनायास सफलता के बाद कबूतर ने लाल रोशनी के समय लटन पर चौंच मारना सीख लिया। भोजन की प्राप्ति ने पुनर्वसन की भूमिका निभाई।

अपने विभिन्न प्रयोगों से प्राप्त परिणामों के आधार पर हिक्नर ने अधिगम के क्रियाप्रसूत सिद्धांत को प्रस्तुत किया। स्पष्ट है कि क्रियाप्रसूत संबंध से तात्पर्य ऐसी अधिगम प्रक्रिया से है जिसमें पुनर्बलन के द्वारा किसी अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ाई जाती है।

अपुन्य प्रयोगों के आधार पर हिक्नर ने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि प्राणी को किसी क्रिया के उपरांत कोई वस्तु प्राप्त हो जाता है तो वह उस कार्य को तत्परा से करने लगता है। इस सिद्धांत के माध्यम से वासकों के वांछित व्यवहार का पुनरावृत्ति कराया जा सकता है। वासकों को वांछित अनुक्रिया के उपरान्त विभिन्न प्रकार के उद्दीपन दिए जाने पर उनके व्यवहार को नियंत्रित किया जा सकता है। हिक्नर ने इस सिद्धांत के आधार पर ही विद्वान अधिगम की प्रक्रिया में पुनर्बलन को महत्व दिया है।

### सबलीकरण (पुनर्बलन) की अवधारणा (Concept of Reinforcement)

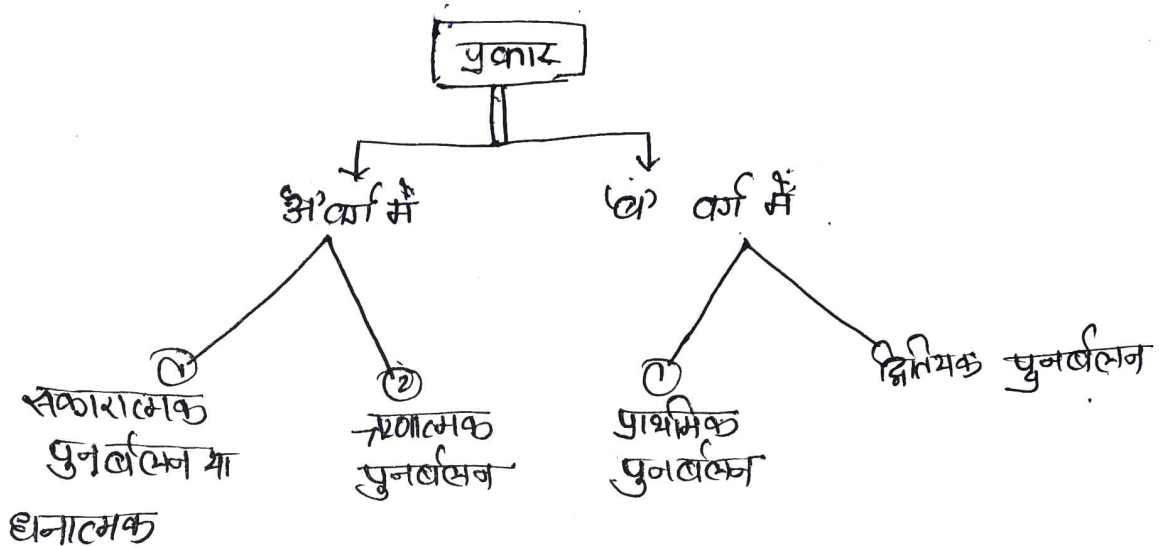
अधिगम में अनुक्रियाओं पर जो प्रभाव पड़ता है, उसकी व्याख्या के लिए हिक्नर ने पुनर्बलन को बहुत महत्व दिया है। उनके अनुसार जो भी अनुक्रिया सबलीकरण तक पहुँचाएगी वही सुदृढ़ होगी।

उदा. - एक बिल के शब्दों में - "पुनर्बलन अनुक्रिया का वह परिणाम है जिससे भविष्य में उस अनुक्रिया

के होने की संभावना में सहा होती है।

## पुनर्वासन के प्रकार

रिक्टर के अनुसार पुनर्वासन के प्रकारों को दो वर्गों में रखा जा सकता है।



1. सकारात्मक / धनात्मक पुनर्वासन :- सकारात्मक अथवा

धनात्मक पुनर्वासन वे उद्दीपक होते हैं जिनकी उपस्थिति से अनुकिया शक्ति बढ़ती है अर्थात् इस प्रकार का पुनर्वासन सक्रिय प्रतिक्रिया की संभावनाओं में सहा करने में सहायक होता है।

जैसे - सुख व्यक्त के लिए भोजन धनात्मक पुनर्वासन है इसमें कुछ पान-पान के लिए व्यक्त कुछ अनुकिया करता है। इसे इत से विहित किया जाता है।

2. ऋणात्मक पुनर्वासन :- ऋणात्मक पुनर्वासन में पुनर्वासन वे उद्दीपक होते हैं जिनकी अनुपस्थिति से अनुकिया

शक्ति होती है।

Ex - यदि लायक कुर्ते के उर से शोषण नहीं करता है और कुर्ते की हवा देने पर वह शोषण करने लगता है तो इस स्थिति में कुर्ते की शक्तिशाली शोषण पुनर्बलन है। इसे (E) से चिह्नित करते हैं।

'क' वर्ग में :-

1. प्राथमिक पुनर्बलन — (Primary Reinforcement) :-

प्राथमिक पुनर्बलन के उद्दीपक होते हैं जिनकी उपस्थिति किए जाने पर कोई अनुक्रिया शक्तिशाली बनता है और इसका संबंध शारीरिक आवश्यकता से होती है।

जैसे - भ्रूण, प्यास, नींद और सुरक्षा के साथ स्थापित किया जाता है। उदाहरणार्थ - दूध पीकर दूधकर खाना प्राप्त कर लेता है।

2. द्वितीयक पुनर्बलन (Secondary Reinforcement) :-

द्वितीयक पुनर्बलन के उद्दीपक होते हैं जो प्राथमिक पुनर्बलन के साथ लगाकर उपस्थित होने के कारण - अनुक्रिया को स्तबल बनाने की शक्ति प्राप्त कर लेते हैं - अर्थात् द्वितीयक पुनर्बलन के उद्दीपक होते हैं। जिसमें स्वयं में संतुष्टीकरण करने की क्षमता नहीं होती किंतु प्राथमिक पुनर्बलन के साथ जुड़कर पुनर्बलन करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

उदाहरणार्थ - प्राथमिक पुनर्बलन शोषण के साथ एक हवा देने की जाए तो बिना शोषण के साथ

6  
एक हवनि की जाए, जो बिना भाजन के हवा पर भी अनुक्रिया का पुनर्लेन करने लगे, तो उसे अनुकूलित पुनर्लेन भी कहते हैं।

पुनर्लेन एक निरंतर प्रक्रिया बनाकर किया

शैक्षिक निहितार्थ =

1. इस सिद्धांत का प्रयोग करके अध्यापक बालक के व्यवहार का विकास ऐसा कर सकता है जो सामाजिक रूप से वांछित और स्वीकार्य हो।
2. पुनर्लेन इस सिद्धांत की मुख्य विशेषता है। पुनर्लेन (पुरस्कार, दण्ड या परिणाम का शीघ्र पता चलना) के माध्यम से बालकों के व्यवहार को सही दिशा दी जा सकती है।
3. यह सिद्धांत अध्यापकों का मार्गदर्शन करता है कि पढ़ाई धार्मिक वाली विषय-वस्तु के पद यदि कम के अनुसार नियोजित किए जाते हैं तो अधिगम सरलता और शीघ्रता से

## निष्कर्ष

1. किसी काम को करने के लिए उद्दीपन की कोई आवश्यकता नहीं है, जब प्राणी को किसी चीज की पाने की आवश्यकता होती है तो वह जीव स्वतः क्रियाशील हो जाता है।

EX - क्यूतर को सूख भोजन पर उदल - दूद करना।

2. क्रिया के बाद प्राप्त सफलता से पुनर्बलन मिलता है।

EX - क्यूतर को भोजन प्राप्त करने से मिला

3. पुनर्बलन से सीखने की क्रिया तीव्र हो जाती है और सीखनेवाला शीघ्र ही सीख जाता है।

EX - भोजन प्राप्त होते ही क्यूतर लीवर दबाना सीख जाता है।

4. सभी प्राणी प्रायः सक्रिय अनुबंध द्वारा ही सीखते हैं इस प्रकार सीखने को हम अनुबंध का सिद्धान्त कहते हैं।

डिकजर ने हमें पुनर्बलन - को बहुत महत्व दिया था।